(सेमीनार के पाइन्टस सुना रहे थे क्लास में।) सेमीनार में पाइन्टस वही हैं जो सदैव चलती रहती हैं। बच्चों की बुद्धि में है हमको क्या समझाना है। मुख्य बात है समझाने की। बाप का परिचय देना है। और 84 जन्मों की कहानी सुनानी है। यह तीजरी की कथा है। सत्य नारायण की कथा है। अमर कथा है। है एक ही। कथाएं जो भक्ति मार्ग में सुनते आये है। अब बच्चों को सारी ड्रामा का मालूम है। सतयुग त्रेता में राजाई है। वहां कथा व स्तुति, भक्ति आदि कुछ भी नहीं हैं। अभी पूछा जाता है किसकी भक्ति करते हो। राधे कृष्ण की भक्ति अक्सर करके सभी करते हैं। भक्ति उन्हों की होती है। शिव की भी भक्ति होती है। कृष्ण ने सत्य नारायण की कथा सुनाई यह हो नहीं सकता। कृष्ण कैसे सुनावेंगे। जब कि खुद ही नारायण हैं। उन्हों को पता नहीं है कि राधे कृष्ण ही लक्ष्मी नारायण हैं। नहीं तो विचार उठे कि छोटे-पन में इतनी चंचलता फिर ज्ञान देवे, यह बात ही नहीं मिलती। लक्ष्मी नारायण तो राजा रानी हैं। वह फिर राजयोग सिखाये न सके। भक्ति मार्ग में मूंझ बहुत है। कृष्ण की आरती करते हैं। तो कहते है जय जगदीश हरे। अब जगदीश ठीक है। बाकि हरे तो दुख हर्ता फिर कृष्ण नही हो सकता। दुख में देवताओं की पूजा करते हैं। तुम बच्चों को मालूम नहीं है शिव बाबा से क्या मांगना है। बाप सब कुछ बच्चों को समझाते रहते हैं। प्रश्न पूछने की भी दरकार नहीं रहती। देवता बनना है तो आसुरी गुण खतम करना चाहिए। मनुष्य में हैं अवगुण। देवताओं में हैं गुण। देवताएं किसको सिखाये नहीं सकते। यह दुख हर नही सकते। सिवाये तुम बच्चों के और कोई समझाये नहीं सकते। और तुमको मिला है बाप समझाने वाला। कल्प पहले भी बाप ने समझाया था, अभी भी बाप समझाते हैं। इस प्रैक्टिकल बात की फिर कहानी बनती है। संगम पर है प्रैक्टीकल। भक्ति मार्ग में फिर उनकी कहानी बनती है। कहानी सुनाने वाले लक्ष्मी नारायण भी नहीं। पास्ट, प्रेजेन्ट और फ्युचर को बाप के सिवाय कोई और नहीं जानते। प्रदर्शनी में भी यह लिखना चाहिए दुनिया का पास्ट प्रेजेन्ट फ्युचर आकर समझो। हिस्ट्री कब कोई बताये न सके। तुम जानते हो अब सतयुग आ रहा है। लड़ाई होगी आगे क्या होगा वह कोई नही जानते। आद, मध्य अन्त का राज सिर्फ तुम संगम पर ही समझते हो। आकर सृष्टि की आद मध्य अन्त की हिस्ट्री जाग्राफी समझो। चक्र को समझो तो सतयुग का चक्रवर्ती राजा बन जावेंगे। सतयुग के लिए पवित्र जरूर बनना पड़ेगा। सृष्टि की आद मध्य अन्त को समझने से सतयुगी चक्रवर्ती विश्व का महाराजा बन सकते हो। ऐसे विचार करना चाहिए। कैसे किसको समझावें। सच्चे साहब को याद करो तो उनसे सुख मिल सकता है। बाप को याद करने से सच खण्ड स्वर्ग का मालिक बन सकते हो। बाप कहते हैं मैं तुम को फिर परिस्थान के परी बनाते हैं। परिस्थान नहीं तो कब्रस्थान। इस समय ऐसी नेचरल ब्युटी नहीं है। माया ने कब्र दाखिल कर दिया है। सतयुग में नेचरल खुबसुरत होते हैं। पिक्चरस बहुत अच्छी हैं। इस दुनिया को परिस्थान नहीं कहेंगे। यह सब सुनना सुनाना भी तुम्हारा धंधा है। और कोई इन बातों को नहीं समझते। आत्मा प्युर नहीं है तो शरीर भी प्युर मिल न सके। तुम ईश्वर के अन्त में गये हो। चीज है और अन्त नहीं पाया जाता। तो वह चीज क्या काम की। हम क्यों याद करते है जब कि अन्त नही पाया जाता है। तुम अब कहेंगे हमने अन्त पाया है। ईश्वर को भी जानते हैं, उनके पार्ट को भी जानते है। ज्ञान बहुत रमणीक और गुह्य है। बाप ही सूर्यवंशी राजधानी स्थापन करते हैं। कृष्ण तो उस राजधानी का मालिक बनते है। पुरुषोतम संगम युग को कोई भी नहीं जानते हैं, तुम बच्चों को बताना होता है। पुरानी दुनिया का विनाश, नई दुनिया की स्थापना। पुरानी और नई दुनिया का यह संगम है। बाप को भी संगम पर ही आना होता है। आगे चल कर सभी को पता पड़ेगा। बच्चों को खुशी भी होती है। जो अच्छी रीत पढ़ते हैं उनको खुशी भी जास्ती होगी। कम पढ़ने वालों को खुशी भी कम। अच्छा बच्चों को याद प्यार गुड नाईट।